डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था

Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्योत्सव 2020 की शुरुआत

मन्नू भंडारी ने किया प्रदर्शनी का उद्घाटन

वाचिक साहित्य को पाठ्क्रम में शामिल करना ज़रूरी — अन्विता अब्बी

नई दिल्ली। 24 फरवरी 2020 । साहित्योत्सव 2020 का शुभारंभ आज अकादेमी की वर्ष 2019 की गतिविधियों की प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुआ। प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रख्यात लेखिका मन्नू भंडारी ने किया। उद्घाटन से पहले अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने उनका स्वागत पारंपरिक गमछा और पुस्तकें भेंट करके किया। अपने स्वागत भाषण में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी द्वारा वर्ष में आयोजित प्रमुख गतिविधियों की जानकारी देते हुए बताया कि अकादेमी ने पिछले वर्ष 715 कार्यक्रम आयोजित किए। अकादेमी ने 484 किताबे प्रकाशित की, जिनमें 239 नए प्रकाशन और 245 पुनःमुर्दित पुस्तकें थीं। उन्होंने विभिन्न देशों के बीच सांस्कृतिक विनिमय की जानकारी भी दी।

मन्नू भंडारी खराब स्वास्थ्य के कारण कोई वक्तव्य नहीं दं पाई, लेकिन उन्होंने सबके बीच अपनी उपस्थिति पर खुशी प्रकट की।

प्रदर्शनी उद्घाटन के बाद पारंपरिक दक्षिण भारतीय वाद्य यंत्रों के स्वरों के बीच दीप प्रज्जवलन भी किया गया। मन्नू भंडारी के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, उपाध्यक्ष माधव कौशिक, साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव एवं विभिन्न भारतीय भाषाओं के संयोजक भी उपस्थित थे।

आज अपराह्न 2.30 बजे तीन दिवसीय अखिल भारतीय आदिवासी सम्मिलन का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन वक्तव्य प्रतिष्ठित भाषाविज्ञानी एवं विदुषी अन्विता अब्बी ने दिया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने परंपरा गमछा और पुस्तकें भेंट कर उनका स्वागत किया। अपने स्वागत वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने भाषा को मस्तिष्क का दर्पण मानते हुए कहा कि आदिवासी भाषाओं में लोकज्ञान की अमूल्य थाती है, जिसमें हमारा अतीत छुपा हुआ है। आदिवासी साहित्य में पारंपरिक ज्ञान के खजाने भरे हैं। हमें उनके इस ज्ञान को संरक्षित करना है और उसे लंबे समय तक जिंदा रखना है। अपने उद्घाटन वक्तव्य में अन्विता अब्बी ने कहा कि आदिवासी वाचिक साहित्य, लोक साहित्य की परंपरा की ही कड़ी है, जिसमें हमारा दैनिक जनजीवन नदी की धारा की भाँति प्रवाहित होता है। हमें सामाजिकता एवं समावेशिता को साथ–साथ लेकर चलना चाहिए। वाचिक साहित्य को कभी मरने नहीं देना चाहिए। इसे स्कूल के पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए।

...2/–

कार्यक्रम का अगला सत्र कविता–पाठ से संबंधित था, जिसमें प्रख्यात कवि चंद्रकांत मुरासिंह की अध्यक्षता में च. सोते आईमोल (आईमोल), मुक्तेश्वर केंपराई (दिमासा), मिर्थनार्क के. मरक (गारो), रूप लाल लिंबू (लिंबू) एवं न्गुरांग रीना (ञिशी) ने सर्वप्रथम अपनी मूल आदिवासी भाषा में एक कविता तथा अन्य कविताएँ हिंदी या अंग्रेज़ी अनुवाद में प्रस्तुत किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के आज सायं 6.00 बजे पारंपरिक लोकसांगीतिक नाटक श्रीकृष्ण पारिजात, दुर्गव्वा मुधोळ एवं साथी कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया।

समारोह का मुख्य आकर्षण साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह कमानी सभागार में कल सायं 5.30 बजे होगा और उसके मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित कवि, कथाकार एवं फ़िल्म निर्देशक गुलजार होंगे।

(के. श्रीनिवासराव)